सुधा ओम ढींगरा की कहानी 'सूरज क्यों निकलता है' का अंतर्पाठ

साधना अग्रवाल

भारतीय मूल की कथा लेखिका सुधा ओम ढींगरा एक लंबे अरसे से अमेरिका में प्रवास कर रही हैं। हिंदी साहित्य में उनकी रुचि है और कविता एवं कहानी लेखन में वे सक्रिय हैं। उनके कई कहानी- संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। सम्प्रति—वे उत्तरी अमेरिका से निकलने वाली त्रैमासिक पत्रिका 'हिंदी चेतना' का संपादन कर रही हैं।

उनकी कहानी 'सूरज क्यों निकलता है' को पढ़कर यदि लोकेल की बात छोड़ दी जाए तो यथार्थ का रंग भारतीय जीवन-समाज के परिवेश से गहरा मिलता है। कहानी की भाषा सशक्त है और यह कहानीकार की सफलता है कि अमेरिकी परिवेश के एक ऐसे यथार्थ से वे हमारा परिचय कराती हैं जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। इस कहानी को पढ़कर मन पर एक बड़ा प्रभाव यह पड़ता है कि प्रवासी लेखकों द्वारा लिखी गई कहानियों का चेहरा समकालीन हिंदी कहानीकारों से बिल्कुल मिलता-जुलता है।

सूरज पूरब में ही नहीं पश्चिम में भी निकलता है। पूरब वाले जानते हैं कि सूरज डूबता पश्चिम में है और पश्चिम वाले सूरज को पूरब में डूबते हुए देखते हैं। सूरज द्वारा दिशा बदलने से यथार्थ का रंग भी बदल जाता है। भारत और अमेरिका के यथार्थ में जमीन-आसमान का फर्क है। वहां की सरकार सिंगल पैरेंटस, खासकर मां के 18 वर्ष की उम्र तक के बच्चों की परवरिश का जिम्मा उठाती है, जिसके कारण वे बच्चे निठल्ले और कामचोर हो जाते हैं। भारत की स्थिति बिल्कुल उलट है। यहां की सरकार को किसी के जीने-मरने की कोई चिंतानहीं और न ही अपने नागरिकों की कोई जिम्मेदारी ही है। यथार्थ के इन दोनों चेहरों में एक बड़ा अंतर्विरोध है। अमेरिका एक संपन्न राष्ट्र माना जाता है और भारत एक गरीब देश। लेकिन विडंबना की बात यह है कि संपन्न देश से भी सरकारी सुविधाओं के कारण वैसे ही नागरिक पैदा हो रहे हैं जैसे इस देश के। कारण स्पष्ट है सुखी जीवन जीने की महत्वाकांक्षा और लालसा। बस यदि कोई फर्क है तो यह कि वहां के निठल्ले-बेकार युवक भीख मांगते अमेरिका की मंदी को कोस रहे हैं, जबकि हमारे यहां के सुदूर निरक्षर, अशिक्षित, आदिवासी, गरीब मजदूर को यह तक पता नहीं है कि हमारे देश का नाम क्या है और इसकी राजधानी कहां है?

आज के अधिकांश हिंदी कहानीकारों, प्रवासी सहित को ठीक से यह बात नहीं मालूम कि कहानी में वे क्या लिख रहे हैं और क्यों लिख रहे हैं। आजकल हिंदी में दो प्रवृत्तियां काफी सक्रिय हैं—कवियों द्वारा कहानियां लिखना और कहानीकारों द्वारा कविता में कहानी लिखना। दूसरी प्रवृत्ति है खूब लंबी कहानियां लिखना। हम जानते हैं कि बड़े से बड़े उपन्यास चाहे वह टालस्टॉय का 'वार एंड पीस' हो, दोस्तयोवस्की का 'क्राइम इन पनिशमेंट' या फिर जां फ्लावेयर का 'अधूरा स्वप्न' या फिर छोटे से छोटा उपन्यास अर्नेस्ट हेमिंग्वे का 'द ओल्ड मैन एंड द सी' की कथावस्तु मुश्किल से दो पंक्तियों की होती है। कोई जरूरी नहीं कि हर मोटा उपन्यास क्लैसिक ही हो। यदि टालस्टॉय, दोस्तयोवस्की और जां फ्लावेयर के मोटे उपन्यास क्लैसिक बन गए तो इसका मुख्य कारण विषयवस्तु का घेरा है। जहां तक हैमिंग्वे के उपन्यास का सवाल है, यह उपन्यास बहुत छोटा यानी 100 पृष्ठों से भी कम है, लेकिन जिस विषय वस्तु को लेकर लिखा गया है, उसका सीधा सरोकार मनुष्य से है। हेमिंग्वे के उपन्यास के बूढ़े आदमी के सामने अछोर फैला समुद्र है और उसकी अदम्य जिजीविषा ही निरंतर उसे संघर्ष से जूझने की शक्ति देती है। मेरे कहने का आशय यह है कि जिस तरह मुक्तिबोध ने लिखा है—'कहीं भी कविता खत्म नहीं होती', उसी तरह न कोई कहानी और न उपन्यास खत्म होता है। बल्कि जीवन के बाद भी जीवन का सिलसिला चलता रहता है। इसी तरह यथार्थ देशकाल के अनुसार बदलता रहता है। प्रेमचंद के 'कफन' का यथार्थ और सुधा ओम ढींगरा की इस कहानी के यथार्थ में कितना फर्क है? स्वयं इस कहानी के बारे में लेखिका लिखती हैं—'यहां की गंदी बस्तियों में जाने का मौका मिला। गरीबी रेखा के नीचे वालों को मिलने वाली सरकारी सुविधाएं लेते हुए पीढ़ी दर पीढ़ी निकम्मे, निठल्ले परिवार देखे। सुविधाओं का दुरुपयोग करते हुए चरित्र, कर्मयोग की धज्जियां उड़ाते, भौतिकवादी संस्कृति को अंगूठा दिखाते, निर्लिप्त, तटस्थ और बेलाग से अपनी एक दुनिया बसाए हुए, कठोर-कायदे कानून, अनुशासन और सरकारी तंत्र को ढीठता से नकारते हुए एक वर्ग में, प्रेमचंद की कहानी 'कफन' के पात्र घीसू और माधो का विश्वव्यापी रूप पाया तो विचलित हो उठी, अंतःकरण छीज गया। समृद्ध राष्ट्र के अंधेरे कोने भारत की अंधी गलियों की तरह ही भयावह हैं। भोजन के लिए मिले कूपन बेचकर शराब, सिगरेट और औरत का जुगाड़ करनेवालों ने अंदर एक कोलाहल पैदा कर दिया। अकर्मण्यता के घिनौने रूप और विश्व- व्यापी मानसिकता ने कहानी के बीज डाले और जिज्ञासा में इन्हीं बस्तियों की क्लबों को खंगालते हुए कहानी को खाद-पानी मिला।'

जब मैं यह कहानी पढ़ रही थी तो मुझे

प्रेमचंद की चर्चित और विवादास्पद कहानी 'कफन' के कुछ प्रसंग याद आ रहे थे। लेकिन मैं समझ नहीं पा रही थी कि भारत के लगभग 75-80 वर्ष पहले का यथार्थ आज के अमेरिका का यथार्थ कैसे हो सकता है? यद्यपि इस कहानी में अमेरिकी नागरिकों को वहां की सरकार द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली सुविधाओं का विस्तार में वर्णन है फिर भी इस कहानी के माध्यम से आप अमेरिका को कितना जान सकते हैं। बाद में जब मैंने सुधा ओम ढींगरा से संपर्क करके इस कहानी पर उनकी रचना-प्रक्रिया जाननी चाही तो मुझे अच्छा लगा कि उन्होंने प्रेमचंद की कहानी 'कफन' का संदर्भ दिया है। इससे मेरी धारणा की पुष्टि ही नहीं हुई बल्कि यह भी लगा कि पुराना यथार्थ एक विकसित और संपन्न अमेरिका जैसे राष्ट्र का वर्तमान यथार्थ भी हो सकता है, देशकाल के फर्क और दूरी के बावजूद।

इस कहानी की एक बड़ी विशेषता यह है कि इसका नैरेशन बहुत दिलचस्प ही नहीं लगता बल्कि कहानी के कहानीपन को अक्षुण्य रखते हुए पाठकों की उत्सुकता बनाए रखता है। कहानी का आरंभ देखिए—"वे गत्ते का एक बड़ा सा टुकड़ा हाथ में लिए कड़कती धूप में बैठ गए, जहां कारें थोड़ी देर के लिए रुक कर आगे बढ़ जाती हैं। बिना नहाए-धोए, मैले-कुचैले कपड़ों में वे दयनीय शक्ल बनाए, गत्ते के टुकड़े को थामे हुए हैं, जिस पर लिखा है—'होम लेस, नीड यौर हैल्प'। कारें आगे बढ़ती जा रही हैं, उनकी तरफ कोई ध्यान नहीं दे रहा। ...ज्यों ही कारें रुकती हैं, वे गत्ते के टुकड़े को उनके सामने कर देते हैं, कुछ लोगों ने उन्हें गाली दी—'बास्टर्ड, यू आर बर्डन ऑन द सोसायटी।' कुछ ने अपनी कार का शीशा नीचे करके कहा—'वाय यू गाईस डोंट वर्क?' दोनों ढीठ हो चुके हैं, गालियां सुन कर चेहरा भावहीन ही रहता है और दोनों ऐसा अभिनय करते हैं कि जैसे उन्होंने कुछ सुना नहीं।"

जिस तरह यह कहानी आरंभ होती है और कार का शीशा उतारकर गत्ते के टुकड़े पर लिखी इबारत को पढ़कर अंग्रेजी में गालियां देकर कारें आगे बढ़ जाती हैं, उससे साफ पता चलता है कि विदेशी पृष्ठभूमि पर लिखी यह कहानी है। गत्ते पर जो लिखा है—'होम लेस, नीड यौर हैल्प' से भी कुछ संकेत मिलता है कि अमेरिका में होम लेस लोगों के प्रति

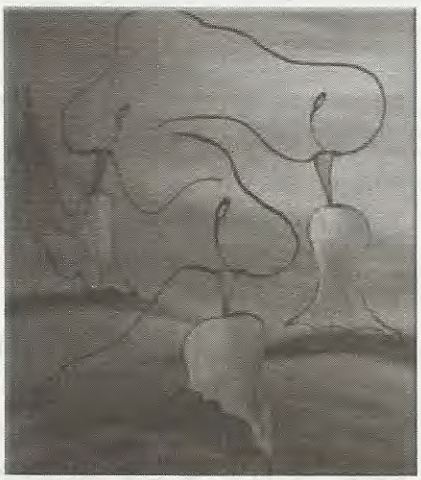

सहानुभूति है और इस भावनात्मक कमजोरी का कुछ लोग दुरुपयोग कर रहे हैं। वस्तुतः यह कहानी अमेरिका के एक वैसे शहर की कहानी है जिसके किसी छोर पर एक जर्जर खस्ताहाल मकान है। इस मकान का भी एक इतिहास है—इस बड़े परिवार में अविवाहित महिला टैरी और उसकी मां है। टैरी का काम है मौज-मस्ती करना, अमीर लोगों को फंसाना और ऐश करना। इस तरह वह 11 बच्चों को जन्म देती है, जिनका पालन-पोषण उसकी मां करती है। मां के स्वभाव, रहन-सहन और आदतों का परिणाम यह निकला कि बेटियां मां के ही नक्शे कदमों पर चलती हुई, रोज पुरुष बदलती हैं और अविवाहिता माएं बनकर सरकारी भत्ता ले रही हैं। दो बेटे नशा बेचने वाले गिरोह में शामिल होकर न्यूयार्क चले गए। दो चोरी-डकैती में जेल में हैं, उनका जेल में आना-जाना लगा रहता है। एक बेटा किसी बिल्डर के साथ काम करता है और वह ही सही ढंग का निकला है। एक बेटे ने मैरुआना के पौधे घर के पिछवाड़े में उगा लिए थे और उसे स्कूल के बच्चों को बेचने लगा था। चूंकि अमेरिका में 18 वर्ष के होने तक बच्चों की जिम्मेदारी सरकार की होती है। टैरी की मां उसे बराबर टोकती भी है लेकिन उसे मौज-मस्ती करने से फुर्सत कहां? इन 11 बच्चों में सबसे छोटे जुड़वां भाई पीटर और जेम्स हैं। शेष भाई जेल में हैं। ले-देकर एक भाई कुछ ठीक है और उसने भरपूर कोशिश की कि पीटर और जेम्स किसी अच्छे काम पर लग जाएं ताकि जिन्दगी ठीक से गुजर-बसर कर सकें। लेकिन जेम्स और पीटर काहिल, कामचोर, निकम्मे और मुफ्त की कमाई करने वाले निकले। अमेरिका में ऐसे लोगों को जो गरीबी रेखा से नीचे के हैं, उनके लिए शेल्टर होम और खाने के लिए, सरकार, कूपन उपलब्ध कराती है बल्कि कुछ स्वयं सेवी संस्थाएं भी मदद करती हैं। पीटर और जेम्स की समस्या यह है कि सरकार से खाने के कूपन तो उन्हें मिल जाते हैं लेकिन शराब और लड़की पाने के लिए उन्हें अतिरिक्त पैसों की आवश्यकता होती है जिसके लिए वे गत्ते का पोस्टर बनाकर भीख मांगते हैं, फिर भी उन्हें पर्याप्त डॉलर नहीं मिलते। मौज-मस्ती के लिए वे एक रास्ता निकालते हैं। मुफ्त के किचेन में खाना खाकर वे सरकारी कूपन बचा लेते हैं और फिर उन्हें आधे दाम में बेचकर शाम में एक क्लब में जाने की तैयारी करते हैं। अब उस पुराने घर के इतिहास को देखें, जहां स्थाई रूप से दो बहनें अपने तीन-तीन बच्चों के साथ रह रही हैं। इस घर में जब-तब भूले-भटके भाई आते-जाते रहते हैं। पीटर और जेम्स का भी इस घर में एक अलमारी में बंद ताले में कुछ सामान है—आयरिश स्प्रिंग साबुन, राईट गार्ड डीओडोरेंट, माउथ फ्रेशनर, प्रेस किए हुए कपड़े आदि। वे क्लब जाने की तैयारी खूब जोर-शोर से करते हैं। नहा-धोकर एकदम फ्रैश, प्रेस किए हुए कपड़े, परफ्यूम, क्लीन शेव करके वे शाम में क्लब पहुचते हैं। इस क्लब में बार भी है और रेस्तरां भी है। इन्हें देखकर कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि वे वही दोनों थे जो हाथ में गत्ता उठाए भीख मांगते हैं। क्लब का मुआइना करने के बाद वे बीयर का ऑर्डर देते हैं। गला तर होते ही उनकी नजर दो खूबसूरत यौवन से मदमाती लड़कियों पर पड़ती है जिनके हाथ में वाईन के गिलास खाली हो चुके हैं। बैरे को बुलाकर वे संकेत से उन दोनों के गिलासों को भरने का ऑर्डर देते हैं। लड़कियां समझ जाती हैं और बाद में धन्यवाद देने के लिए उनके पास पहुंचती हैं। फिर उन लड़कियों—लौरा और सहरा के साथ वे डांस करने लगते हैं। शराब के नशे और स्त्री अंग के स्पर्श से उनमें कामोत्तेजना पैदा होती है। बीच में दोनों से संवाद होता है और बाद का कार्यक्रम वे निश्चित कर लेते हैं लेकिन दोनों लड़कियां वाशरूम के बहाने वहां से खिसक ही नहीं जाती हैं बल्कि उन दोनों की जेबों से पैसे निकाल लेती हैं। बाद में जो स्थिति उत्पन्न हुई, वह वीभत्स भी है और घिनौनी भी। वे और शराब पीते हैं और डांस करने लगते

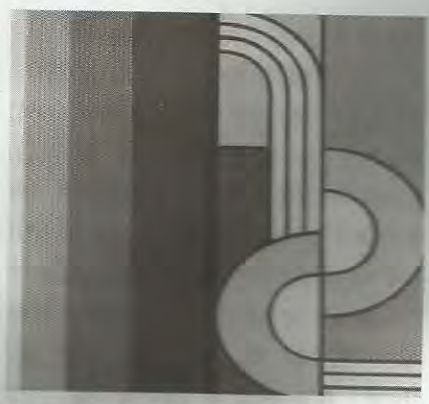

हैं। अंततः सिक्योरिटी गार्ड्स उन्हें क्लब से बाहर निकाल कर एक कोने में छोड़ देता है।

रात बीतने के बाद और सुबह होने पर जब सूरज की रोशनी उन पर पड़ती है तो झल्ला कर कहते हैं—'सूरज क्यों निकलता है' क्योंकि वे गहरी तन्द्रा में थे। बाद में क्लब के सफाई कर्मचारी उन्हें वहां से भगा देते हैं।

यह कहानी किंचित लंबी है लेकिन उबाऊ नहीं। कहानी की पठनीयता आरंभ से लेकर अंत तक बनी रहती है। यह सुधा ओम ढींगरा की एक वयस्क कहानी है जिसमें यथार्थ की अनेक परतें हैं। ऊपर से देखने पर यह कहानी किसी पाठक को सामान्य लग सकती है लेकिन इस कहानी की रचना प्रक्रिया बहुत जटिल है क्योंकि अमेरिका जैसे सम्पन्न आधुनिक तथाकथित सभ्य राष्ट्र के वर्तमान यथार्थ का घिनौना चेहरा है। यह अकारण नहीं है कि यह कहानी हमारी स्मृतियों में देर तक टिकती है क्योंकि इसमें कहीं कोई वाग्जाल नहीं है। पूरी कहानी शुरू से आखिर तक संवाद में और विवरण में विश्वसनीयता लिए हुए हैं। पीटर और जेम्स दोनों के अपने-अपने तर्क हैं। वे अमेरिका की मंदी को इसलिए कोसते हैं कि उन्हें भीख में पर्याप्त डालर नहीं मिलते। और तो और काम न करने का उनका तर्क देखिए—"हमें दूसरे लोगों की तरह दो वक्त के भोजन के लिए काम कर-करके मरना-खपना नहीं है। वह तो हमें बिना काम किए ही मिल जाता है।"

यह कहानी मुझे सचमुच अच्छी लगी है खासकर इसलिए कि इसे एक प्रवासी लेखिका ने लिखा है और हमें एक बिल्कुल नए यथार्थ से परिचित कराया है।

बी-19/एफ, दिल्ली पुलिस अपार्टमेंट्स, मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली-110091, मो. 9891349058

हिंदीसमयडॉटकॉम : हिंदी का सबसे बड़ा ऑनलाइन पुस्तकालय

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय से एक अपेक्षा यह की जाती है कि वह हिंदी को अंतराराष्ट्रीय भाषा बनने के लिए आवश्यक उपकरण उपलब्ध कराए। यह तभी संभव हो सकता है, जब हिंदी न सिर्फ गंभीर विमर्श का माध्यम बने, बल्कि हिंदी में लिखा गया महत्त्वपूर्ण साहित्य देश-विदेश के विशाल पाठक समुदाय तक पहुंचे। विश्वविद्यालय द्वारा संचालित हिंदीसमयडॉटकॉम इसी दिशा में एक महत्त्वाकांक्षी प्रयास है। हिंदीसमयडॉटकॉम का उद्देश्य यह है कि हिंदी में जो कुछ महत्त्वपूर्ण लिखा गया है, उसे हिंदीसमयडॉटकॉम के जरिए दुनियाभर में फैले साहित्य प्रेमियों को उपलब्ध कराया जाए।

यद्यपि इंटरनेट पर अनेक ऐसे वेबसाइट हैं, जहां हिंदी में प्रकाशित कुछ कृतियाँ और रचनाएं उपलब्ध हैं, पर कोई ऐसी वेबसाइट नहीं है, जो संपूर्ण हिंदी साहित्य को नेट पर लाने के लिए प्रतिबद्ध हो। इस दृष्टि से हिंदीसमयडॉटकॉम एक अनोखी परियोजना है। इस वेबसाइट ने अल्प समय में ही अच्छी-खासी लोकप्रियता अर्जित कर ली है। अभी तक लगभग साढ़े चार लाख पाठक हमारी वेबसाइट पर आ चुके हैं। करीब दो हजार पाठक रोज हिंदीसमयडॉटकॉम का पन्ना खोलते हैं। इनमें संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी, नार्वे, डेनमार्क, पाकिस्तान, कतर, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, ईरान, पुर्तगाल, स्पेन आदि देशों के पाठक होते हैं। अक्सर हमें इच्छुक पाठकों की मेल मिलती है कि अमुक-अमुक पुस्तक को हिंदीसमयडॉटकॉम पर उपलब्ध कराने की कृपा करें।

हिंदीसमयडॉटकॉम पर इस समय एक लाख से ज्यादा पृष्ठों पर हिंदी की बहुत-सी मूल्यवान रचनाएं संजोई जा चुकी हैं तथा रोज कुछ नया जोड़ा जाता है। पहले चरण में हम कॉपीराइट-मुक्त कृतियों को हिंदीसमयडॉटकॉम पर दे रहे हैं, यद्यपि इसके साथ ही महत्त्वपूर्ण समकालीन साहित्य को भी प्रकाशित किया जाता है। यह सारा साहित्य बिना किसी शुल्क के न केवल इंटरनेट पर पढ़ा जा सकता है, बल्कि डाउनलोड भी किया जा सकता है।

हिंदीसमयडॉटकॉम पर उपलब्ध सामग्री को चौदह मुख्य खंडों में बांटा गया है—उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक, आलोचना, भक्ति काल का साहित्य, विभाजन की कहानियां, लेखकों के समग्र और संचयन, ई-पुस्तकें, अनुवाद तथा विविध, जिसमें वैचारिक निबंध, संस्मरण, व्यंग्य, यात्रा वृतांत आदि शामिल हैं। एक प्रमुख खंड 'हिंदुस्तानी की परंपरा' का है, जिसमें उन कृतियों तथा रचनाओं को शामिल किया गया है, जो हिंदी-उर्दू की साझा परंपरा का जीवंत दस्तावेज हैं। एक खंड अभिलेखागार का भी है, जिसमें हिंदी के रचनाकारों की तस्वीरों, उनकी हस्तलिपि में लिखित रचनाओं, ऑडियो, वीडियो, पत्रों आदि का संकलन है। लेखक दीर्घा में हिंदी के सभी समकालीन रचनाकारों का संक्षिप्त परिचय, फोटोग्राफ, पता, फोन नंबर आदि उपलब्ध कराने का प्रयास जारी है।

जाहिर है, हिंदीसमयडॉटकॉम को निरंतर समृद्ध करते चलना एक बड़ा काम है। इसमें हिंदी के सभी लेखकों, संपादकों तथा हिंदी प्रेमियों का सहयोग अपेक्षित है। इन सभी से अनुरोध है कि अपने सुझाव, उनके पास उपलब्ध रचनाएं तथा सूचनाएं आदि भेजकर हिंदीसमयडॉटकॉम को उपकृत करें। हिंदीसमयडॉटकॉम के संपादक मंडल से संपर्क करने के लिए 07152230912 पर फोन करें या editorhindisamay@gmail.com पर मेल करें।

राजकिशोर

53, इंडियन एक्सप्रेस अपार्टमेंट्स, मयूर कुंज, दिल्ली-110096

फोन : 09650101266